भजन

चौदे लोक की दुनिया क्षर है, अक्षरब्रह्म क्षर के पारा
अक्षरातीत की लीला न्यारी, जो इन दोनों से भी न्यारा

1- तीन गुण और पांच तत्व से, बनी जो वस्तु फानी है
कालमाया का है ब्रह्मांड ये, दुख ही दुख इसकी निशानी है
कोई न इसके फंद से निकले, मिले कभी न मुक्ति द्वारा

2- लीला सत की होती जिसमें, अखण्ड वहां की धरती है
अक्षरब्रह्म मालिक कहलाते, योगमाया की धरती है
क्षण में कई ब्रह्माण्ड बनावे, होवे फना जो करें इशारा

3- प्रेममयी भूमि है नूर की, सच्चिदानंद जहां रहते हैं
प्रेम की लीला होती निसदिन, वेद शास्त्र भी कहते हैं
नूर भरा कण कण के अन्दर, लीला धाम की अपरम्पारा